श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

श्रद्धावान व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। उसमें विकास स्वयं हो जाता है। ईश्वर में हमारी श्रद्धा अहेतुकी है। माता–पिता, गुरू, देव और महात्माओं के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत हो जाता है। माता–पिता जन्म देने वाले हैं। इसलिए उनके प्रति श्रद्धा का भाव होना स्वाभाविक है। गुरू ज्ञान देता है जिससे व्यक्ति संसार का ज्ञान प्राप्त करता है। बिना गुरू के ज्ञान रूपी नेत्र का उद्घाटन नहीं होता। धर्म, कर्म की भावना मनुष्य में जागृत होती है वह मंदिरों में जाता है। ईश्वर का दर्शन करता है। अपनी मनोकामना पूर्ण होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। सभी व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। किन्तु जिनके ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हुआ रहता है वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता। श्रद्धावान व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त करता है। जिस व्यक्ति में अहंकार रहता है वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता। जो व्यक्ति गुरू की शरण में विनय भाव से जाता है। गुरू उसे शिक्षा देकर अपने समान बनाने का प्रयास करता है।

जीवन निर्माण का बहुत अच्छा सूत्र है दूर दृष्टि और पक्का इरादा। दूर दृष्टि का अर्थ है कि व्यक्ति को दूरदर्शी होना चाहिए। कोई कार्य करने के पहले चिन्तन, मनन और निदिध्यासन आवश्य है। दूर दृष्टा व्यक्ति समाज को नई दिशा देता है। महापुरूषों का जीवन दूर दृष्टि वाला होता है। चाहे पारिवारिक कार्य हो, चाहे सामाजिक कार्य हों या चाहे राष्ट्रीय कार्य हों दूर दृष्टि रखकर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। कार्य प्रारम्भ करने में आत्मविश्वास का होना बहुत जरूरी है। कार्य को प्रारम्भ करने के बाद यदि बीच में कोई बाधा आवे तो कार्य को छोड़कर पलायन नहीं करना चाहिए। जो भी समस्या हो उसका निदान करना चाहिए। यदि मनुष्य का इरादा पक्का होता है तो वह असम्भव को भी सम्भव बना देता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी किसी कार्य को करने से पहले दूर दृष्टि और पक्का इरादा रखते हैं। कार्य को प्रारम्भ करने के बाद चाहे कितनी भी कठिनाई आये उसको पूरा करके ही छोड़ते

हैं। कठिनाईयों को जीतकर आगे बढ़ने की कला उनमें है। भारत देश को एक महाशक्ति के रूप में उन्होंने स्थापित कर दिया है।

मनुष्य अकेले ही चाहे तो देश की दिशा और दशा को बदल सकता है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, भगवान शंकराचार्य जैसे महापुरूषों ने सम्पूर्ण भारत की दशा और दिशा को परिवर्तित कर दिया। दूर दृष्टि और पक्का इरादा उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। जब मनुष्य सत्य मार्ग पर चलता है तो सभी लोग उनका साथ देते हैं। हम जो चिन्तन करते हैं उसके प्रति समर्पित हो जाना दृढ़ संकल्प है। ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

मनुष्य के पास विकसित तन, मन और दृढ़ इच्छा है। यदि मनुष्य का संकल्प दृढ़ रहे तो वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जायेगा। भूत वर्तमान और भविष्य को समझने और जानने की शक्ति मनुष्य के पास है। दृढ़ संकल्प शक्ति से एकाग्रता बढ़ती है। एक जगह चित्त होने से आनन्द की प्राप्ति होती है। नकारात्मकता दूर हो जाती है। दृढ़ संकल्पवान आगे बढ़ता है। जितने भी उद्योगपति है वे दृढ़ संकल्प के धनी हैं। सूचना क्रान्ति लाने में उद्योगपतियों ने कड़ी मेहनत की है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी दृढ़ संकल्प के धनी है। वे जिस लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं उसे प्राप्त करने के लिये जीजान से प्रयास करते हैं। उनके साथ 125 करोड़ देशवासियों की शक्ति कार्य करती है। अपने पड़ोसी देशों के साथ आंख से आंख मिला लेने की शक्ति उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिणाम है। दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ कार्य करते हुए भारत को एक नयी ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। दृढ़ संकल्प शक्ति के लिये कड़ी मेहनत, दूर दृष्टि और पक्का इरादा होना बहुत आवश्यक है।

कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में ही मेहनत का अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा बारह पास करते ही विद्यार्थी के सामने अनेक विकल्प खुले रहते है। विकल्पों के साथ–साथ अपनी शक्ति और सामर्थ्य का भी

अंदाजा लगा लेना चाहिए। जीवन के रणक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ है। विद्यार्थी जीवन में किया गया परिश्रम जीवन भर के लिए सुख और शांति का प्रदाता होता है। जिसने अपने विद्यार्थी जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट कर दिया उसको जीवन भर दुःख भोगना पड़ता है और दूसरों के सहारे जीवन–यापन करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति समाज पर बोझ होकर जीवन–यापन करता है। विद्यार्थियों को जीवन में ऐसा प्रयास करना चाहिए कि जीवन में सफलता प्राप्त हो और दूसरे लोगों को भी संबल दिया जा सके। संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उनके जीवन का मूलमंत्र कड़ी मेहनत है। जन्म से कोई महान् नहीं होता, कड़े परिश्रम और मेहनत से ही कोई व्यक्ति महान् होता है। श्रद्धा में बहुत शक्ति है। श्रद्धा जीवन निर्माण करती है।